माँ सरस्वती चालीसा

सरस्वती चालीसा माँ सरस्वती की स्तुति का एक पवित्र पाठ है, जिसे नियमित रूप से करने से व्यक्ति के जीवन में ज्ञान, बुद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ माँ सरस्वती चालीसा ॥

॥ दोहा ॥

जनक जननि पदकमल रज, निज मस्तक पर धारि ।बन्दौं मातु सरस्वती, बुद्धि बल देहु अपार ॥
पूर्ण जगत में व्याप्त तव, महिमा अमित अनन्त ।दुष्टजनों के पाप हर, सज्जन करहु कृतकृत्य ॥

॥चौपाई ॥

जय श्री सकल बुद्धि बलरासी । जय सर्वज्ञ अमर अविनाशी ॥जय जय जय वीणाकर धारी ।
करती सदा सुहंस सवारी ॥ रूप चतुर्भुज धारी माता । सकल विश्व अंदर विख्याता ॥
जग में पाप बुद्धि जब होती । धर्म की फीकी ज्योति ॥ तबहि मातु का निज अवतारा ।
पापहीन करती महि तारा ॥बाल्मीकि जो थे हत्यारा । तव प्रसाद जानै संसारा ॥
रामचरित जो रचे बनाई । आदि कवि की पदवी पाई ॥ कालिदास जो भए विख्याता ।
तेरी कृपा दृष्टि से माता ॥ तुलसी सूर आदि विद्वाना । भए और जो ज्ञानी नाना ॥
तिन्ह न और रहेउ अवलंबा । केवल कृपा आपकी अम्बा ॥ करहु कृपा सोइ मातु भवानी ।
दुखित दीन निज दासहि जानी ॥ पुत्र करै अपराध बहूता । तेहि न धरै चित सुन्दर माता ॥
राखु लाज जननी अब मेरी । विनय करौं भाँति बहु तेरी ॥ मैं अनाथ तेरी अवलंबा ।
कृपा करउ जय जय जगदम्बा ॥ मधुकैटभ जो अति बलवाना । बाहुयुद्ध विष्णु ते ठाना ॥
समर हजार पाँच में घोरा । फिर भी मुख उनसों नहि मोरा ॥ मातु सहाय भई तेहि काला ।
बुद्धि विपरीत करी खलहाला ॥ तेहि ते मृत्यु भई खल केरी । पुरवहु मातु मनोरथ मेरी ॥
चण्ड मुण्ड जो थे विख्याता । क्षण महुँ संहारेउ तेहि माता ॥ रक्तबीज से समरथ पापी ।
सुर मुनि हृदय धरा सब काँपी ॥ काटेउ सिर जिमि कदली खम्बा । बारंबार बिनवौं जगदम्बा ॥
जग प्रसिद्ध जो शुंभ निशुंभा । क्षण में बाँधे ताहि तू अम्बा ॥ भरत मातु बुधि फेरेउ जाई ।
रामचन्द्र बनवास कराई ॥ एहि विधि रावण वध तू कीन्हा । सुर नर मुनि सबको सुख दीन्हा ॥
को समरथ तव यश गुन गाना । निगम अनादि अनंत बखाना ॥ विष्णु रुद्र जस कहिन मारी ।
जिनकी हो तुम रक्षाकारी ॥ रक्तदन्तिका और शताक्षी । नाम अपार है दानव भक्षी ॥
दुर्गम काज धर पर कीन्हा । दुर्गा नाम सकल जग लीन्हा ॥ दुर्ग आदि हरणी तू माता ।
कृपा करहु जब जब सुखदाता ॥ नृप कोपित को मारन चाहे । कानन में घेरे मृग नाहे ॥
सागर मध्य पोत के भंजे ।अति तूफान नहिं कोऊ संगे ॥ भूत प्रेत बाधा या दुःख में ।
हो दरिद्र अथवा संकट में ॥ नाम जपे मंगल सब होई । संशय इसमें करै न कोई ॥
पुत्रहीन जो आतुर भाई । सबै छाँड़ि पूजें एहि माई ॥ करै पाठ नित यह चालीसा ।
होय पुत्र सुन्दर गुण ईसा ॥ धूपादि नैवेद्य चढ़ावै । संकट रहित अवश्य हो जावै ॥
भक्ति मातु की करै हमेशा । निकट न आवै ताहि कलेशा ॥ बन्दि पाठ कर प्रेम सहित ।
होय मनोवांछित फल दिहित ॥

॥दोहा ॥

मातु सरस्वती की कृपा, रहे सदा उर धार ।
विद्या बुद्धि धन धान्य दे, करहु सकल उद्धार ॥